स्वरूप सागर : यह झील नाशपाती का आकार लिए उत्तरी छोर से सिमटी हुई एवं दक्षिणी छोर से फैली हुई है। यह झील जल प्रवाह परिवर्तन का एक उदाहरण है। इस झील का निर्माण 1678 ई.सं. में महाराणा स्वरूप सिंह द्वारा करवाया गया। यह पिछोला बाँध के अमर ओटे एवं रंगसागर से उत्तर में स्थित है, जिसके अन्दर पानी में कलालो का शिव मंदिर होने से इसे कलाल्या शिवसागर भी कहते है। परन्तु महाराणा स्वरूपसिंह के समय में इसका पूर्वी बाँध टूट गया, तब इसे नया बनवाकर इसका नाम स्वरूप सागर रखा गया। महाराणा सज्जनसिंह ने अमरकुण्ड, रंगसागर की बीचली पालों (बाँधो) को काटकर पिछोला की हद मौजूदा स्वरूप सागर नाले तक बढ़ाकर पक्का नाला (ओटा) बनवा दिया था।

चार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैली हुई इस झील की अधिकतम् गहराई 13.4 मीटर है। रंगसागर से जुड़ी हुई यह झील फतहसागर को लिंक नहर के माध्यम से जोड़ती है जिससे इसका अतिरिक्त पानी फतहसागर में जाता है। इस झील पर लगे हुए सलूस गेट एवं रपट से पिछोला संकुल का अधिक पानी नियंत्रित होकर गुमानियावाला नाले में आयड़ नदी से होता हुआ उदयसागर में समाहित होता है। वर्तमान में कुम्हारिया तालाब व रंगसागर की तरह यह झील भी अत्यन्त प्रदूषित है। यह झील प्रायः जलकुम्भी एवं जलीय घास से ढकी रहती है, जिससे जलीय जीव नगण्य हैं। असावधानी के कारण इस झील का प्रदूषित जल फतहसागर को भी प्रदूषित करता रहता है।

स्वरूप सागर गेट एवं पक्का नाला – पूर्ण भराव क्षमता पर पानी के ओवरफ्लो का दृश्य

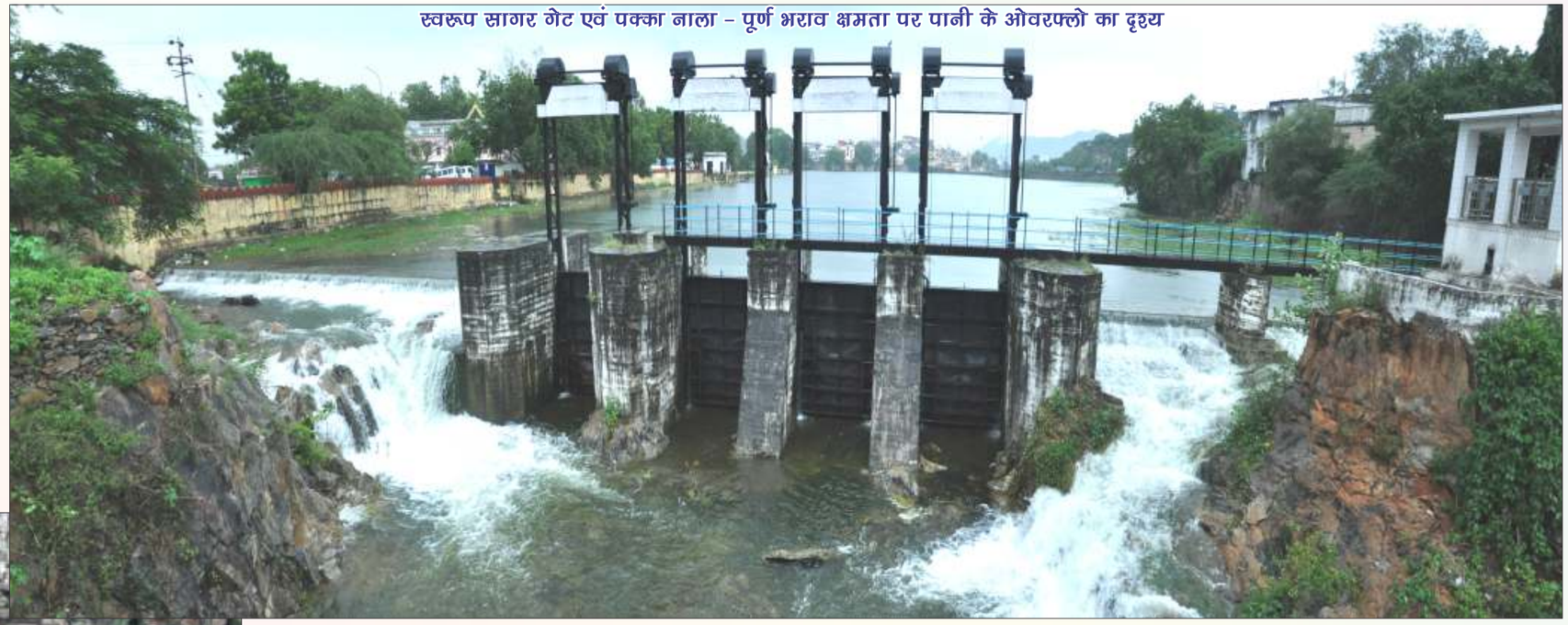

उपग्रह चित्र

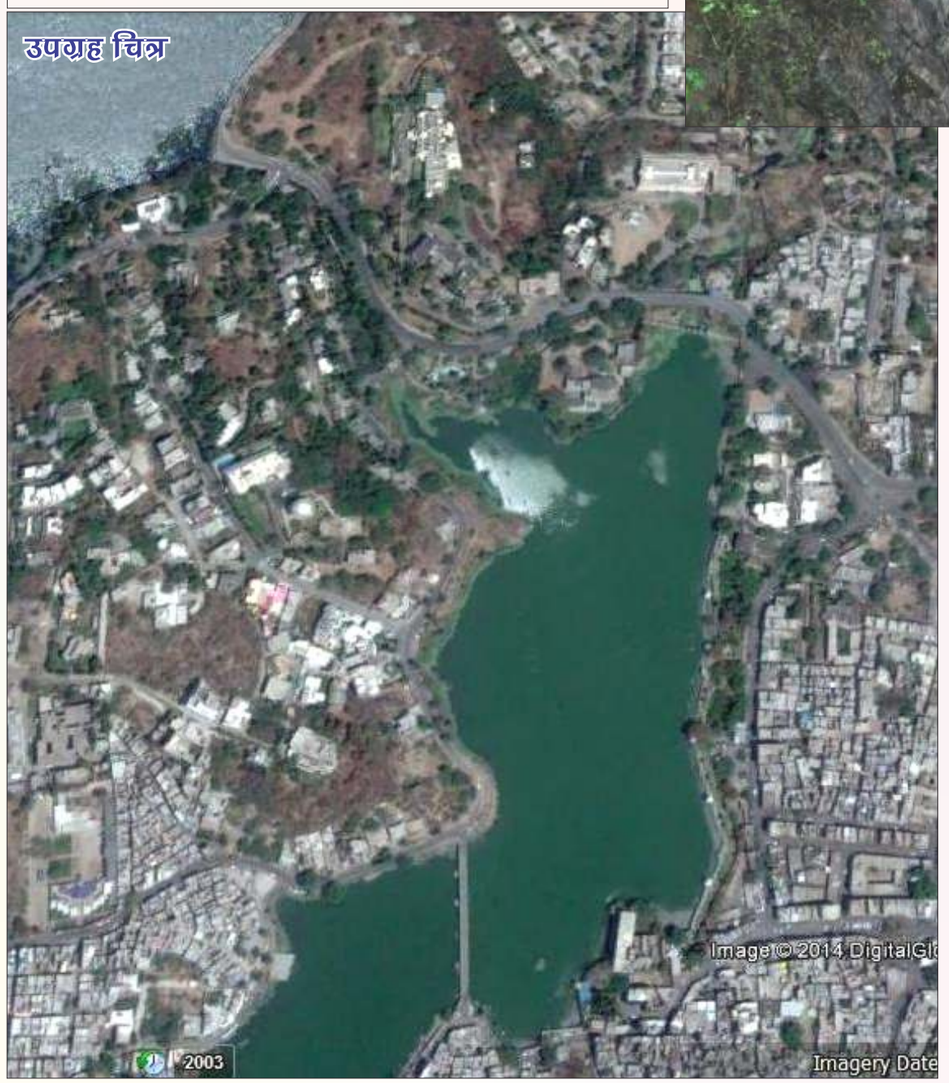

रंगसागर एवं स्वरूप सागर के मध्य स्थित नई पुलिया पूर्ण भराव स्तर पर – एक सुन्दर एवं भव्य स्वरूप

जलकुम्भी एवं काई को समय-समय पर नियमित रूप से निकाला जाना चाहिये।

महाराणा स्वरूप सिंह (1842–1861) : महाराणा स्वरूप सिंह का जन्म 8 जनवरी, 1815 को हुआ। इनके पिता बागोर के महाराज शिवदान सिंह जी थे। महाराणा स्वरूप सिंह अपने पूर्ववर्ती महाराणा सरदार सिंह की मृत्यु के बाद 15 जुलाई, 1842 में साढ़े 28 वर्ष की आयु में मेवाड़ की गद्दी पर बैठे। महाराणा सरदार सिंह का कोई पुत्र नहीं था और अपनी मृत्यु से पहले उन्होंने औपचारिक रूप से अपने भाई स्वरूप सिंह को अपने उत्तराधिकारी के रूप में अपनाया। उनके उत्तराधिकार के साथ स्वरूप सिंह जी पर मेवाड़ की गिरती वित्तीय स्थितियों को पुनर्जीवित करने के लिए आर्थिक सुधार लाने की जिम्मेदारी दी थी। उन्होंने इस दिशा में विभिन्न सुधारों की शुरूआत की जिनका समय के साथ प्रभाव पड़ा। उन्होंने शासन के दौरान सिक्कों के नए रूपों की शुरूआत की और पारम्परिक एवं सामाजिक मूल्यों में बदलाव लाते हुए मेवाड़ में सती प्रथा को प्रतिबन्धित किया।

दूसरी ओर उन्होंने मेवाड़ और आसपास के क्षेत्रों में अंग्रेजों का समर्थन किया और उनके प्रति अपनी वफादारी साबित की। उन्होंने उदयपुर के जग–मन्दिर पैलेस में ब्रिटिश शरणार्थियों को आश्रय दिया और उनकी रक्षा कर उनका विश्वास जीता। उन्होंने अपनी सेना की एक छोटी टुकड़ी को नीमच और निम्बाहेड़ा में विद्रोह को दबाने के लिए भेजा। निम्बाहेड़ा जो उनके पूर्वजों के शासन के दौरान मेवाड़ का एक क्षेत्र रहा था, उनकी सेना द्वारा पुनः इस पर कब्जा कर लिया गया। इस प्रकार उनके शासन ने मेवाड़ की स्थिति और उसके वित्तीय संसाधनों को पुनर्जीवित करना शुरू कर दिया।

वर्ष 1861 में उन्होंने महाराणा संग्राम सिंह द्वितीय के वंशज मेवाड़ की बागोर शाखा से शंभूसिंह को गोद लिया एवं उन्हें उत्तराधिकारी के रूप में नामांकित कर अपना शासन उन्हें सौंप दिया। तत्पश्चात् महाराणा स्वरूप सिंह का मात्र 46 वर्ष की अल्पायु में 9 नवम्बर, 1861 को स्वर्गवास हो गया।

महाराणा स्वरूप सिंह कुशाग्रबुद्धि, न्यायप्रिय एवं दृढ़ निश्चयी थे। उनमें किसी भी व्यक्ति की बुराई–अच्छाई सबकी पहचान करने की एक अच्छी समझ थी। वे अपने पूर्वजों पर गर्व करने वाले, धर्म पर दृढ़ तथा दान वगैरह कार्यों में उदार थे। महाराणा स्वरूप सिंह के समय कलाल्या शिवसागर का पूर्वी बाँध (पाल) टूट गया, तब इसे नया बनवाकर इसका नाम स्वरूप सागर रखा गया था।

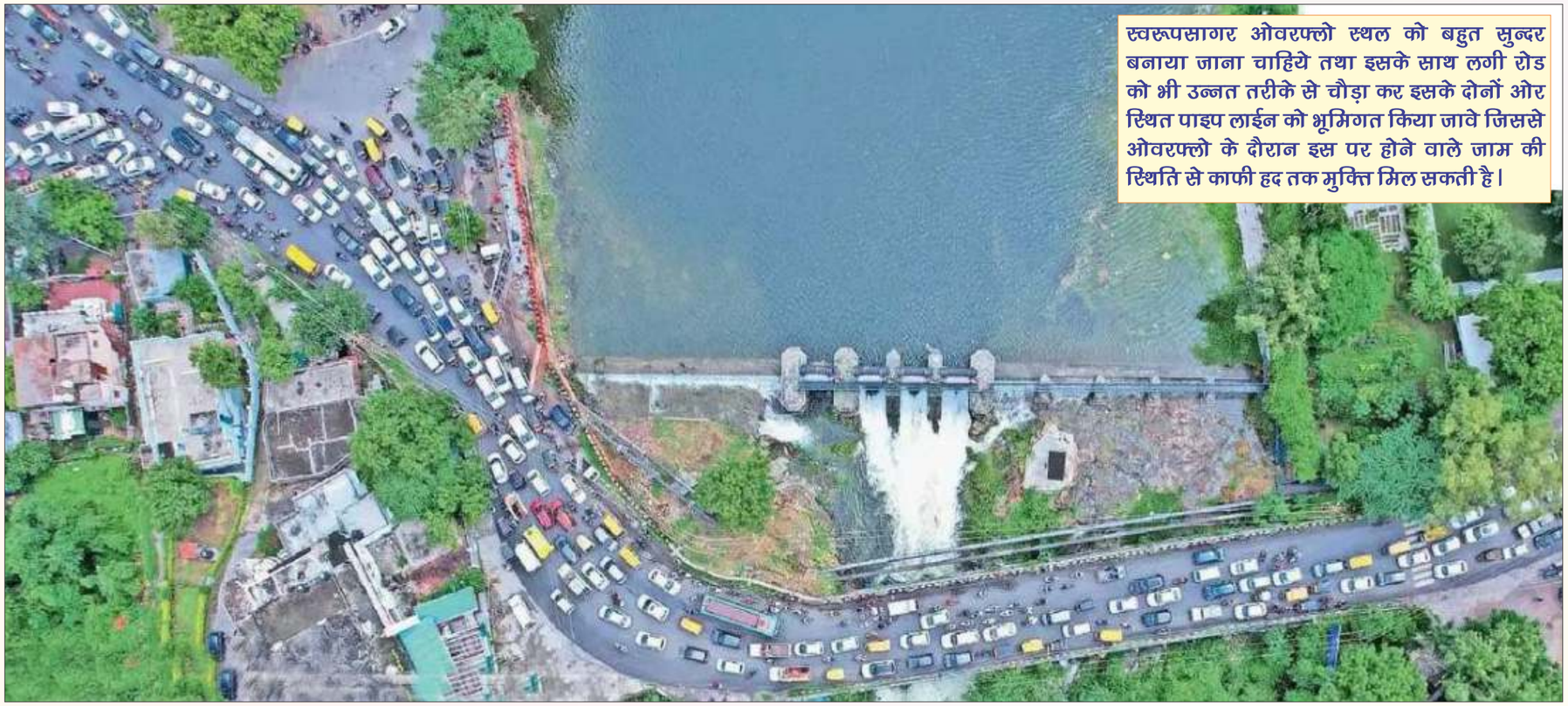

स्वरूपसागर ओवरफ्लो स्थल को बहुत सुन्दर बनाया जाना चाहिये तथा इसके साथ लगी रोड को भी उन्नत तरीके से चौड़ा कर इसके दोनों ओर स्थित पाइप लाईन को भूमिगत किया जावे जिससे ओवरफ्लो के दौरान इस पर होने वाले जाम की स्थिति से काफी हद तक मुक्ति मिल सकती है।

स्वरूप सागर : संपूर्ण पिछोला तंत्र

स्वरूप सागर ओवरफ्लो स्थान से गुमानिया वाले नाले जिसके एक तरफ हिन्दुस्तान जिंक का मुख्यालय एवं दूसरी तरफ दैत्य मगरी आवासीय कॉलोनी के मध्य स्थल से दर्शनीय वाटर फॉल का निर्माण कर प्रतिदिन रंग–बिरंगी रोशनी के साथ पर्यटकों और शहरवासियों के लिए एक निश्चित समय पर इसे चलाना चाहिये। इससे इसकी सुन्दरता में अभिवृद्धि के साथ पर्यटकों की संख्या में भी बढ़ोतरी होगी।

स्वरूप सागर गेट – पिछोला तन्त्र के पूर्ण भराव क्षमता पर स्वरूप सागर गेट से अतिरिक्त जल बहता हुआ

रात्रिकालीन ओवरफ्लो दृश्य

स्वरूप सागर पिछोला झील तंत्र की अन्य झीलों से जुड़ा हुआ – सुन्दर परिदृश्य

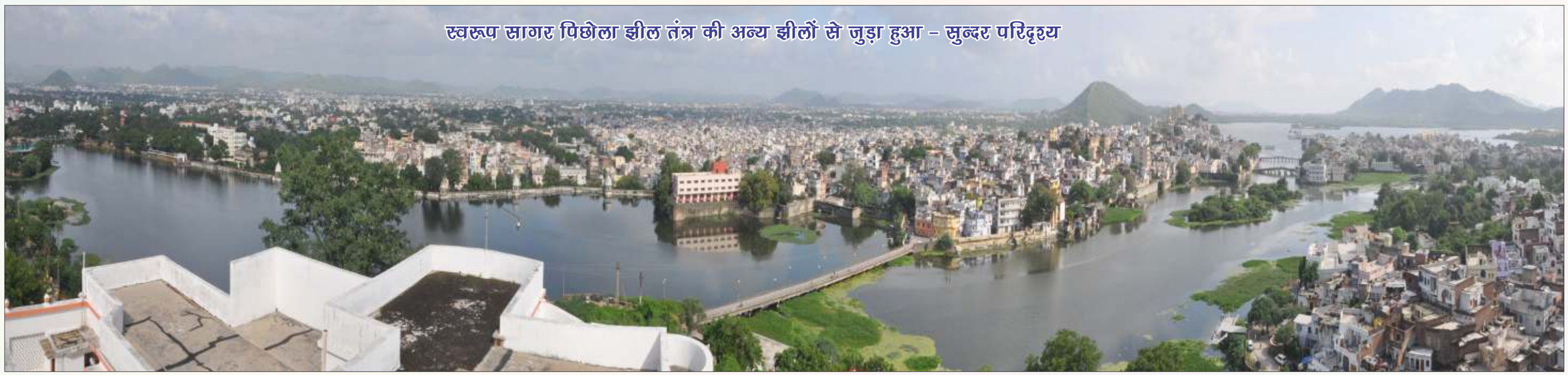

स्वरूप सागर के पश्चिमी भाग अम्बावगढ़ से – अथाह जलराशि के साथ झील की मुख्य पाल पर स्थित पाँच छतरियाँ एवं घाट का अलौकिक परिदृश्य

संपूर्ण स्वरूप सागर का विहंगम दृश्य : नई पुलिया, अम्बावगढ़ छोर, गेट एवं पाल

स्वरूप सागर पूर्वी छोर की मुख्य पाल से अटा हुआ सुन्दर उद्यान

स्वरूप सागर के उत्तरी छोर एवं लिंक नहर के पास स्थित सुन्दर उद्यान

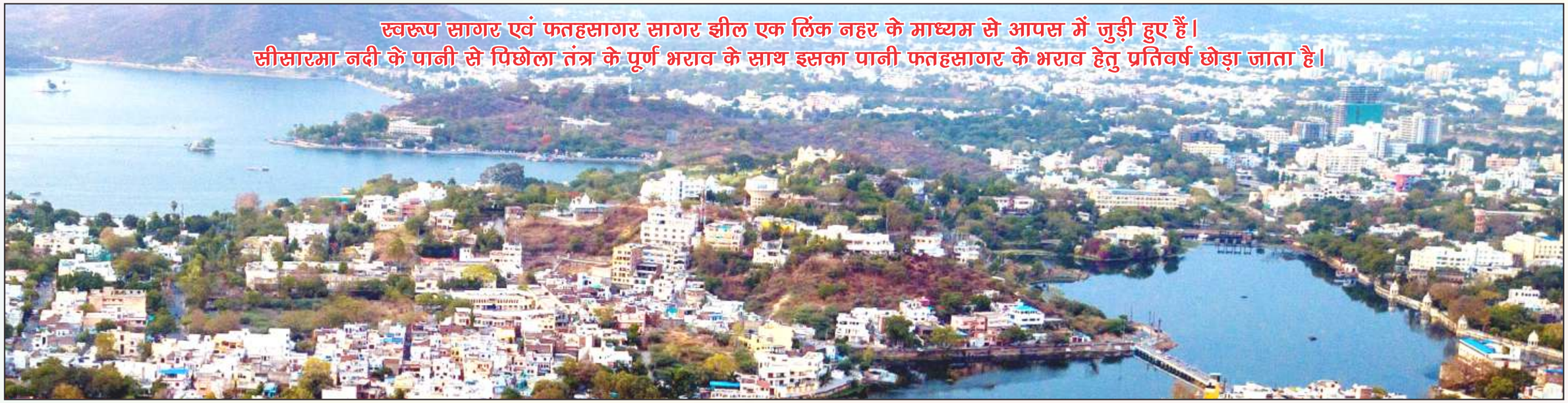

स्वरूप सागर एवं फतहसागर सागर झील एक लिंक नहर के माध्यम से आपस में जुड़ी हुए हैं।
सीसारमा नदी के पानी से पिछोला तंत्र के पूर्ण भराव के साथ इसका पानी फतहसागर के भराव हेतु प्रतिवर्ष छोड़ा जाता है।

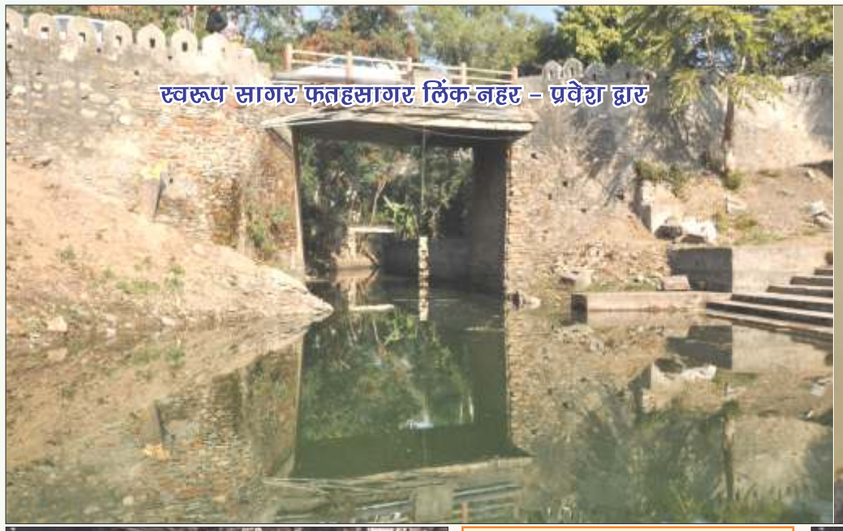

स्वरूप सागर फतहसागर लिंक नहर – प्रवेश द्वार

लिंक नहर – मध्य भाग

लिंक नहर : फतहसागर छोर पर पूर्व एवं अंतिम गेट

स्वरूप सागर एवं फतह सागर लिंक नहर : वर्तमान में इसके अव्यवस्थित रखरखाव के कारण इसमें वर्षभर गन्दे पानी के साथ डिस्पोजल सामग्री, जलकुम्भी, विविध खरपतवार भरी रहती है। ओवरफ्लो के समय यह सारा गन्दा पानी एवं गन्दगी फतहसागर में समाहित होती है। इससे फतहसागर का स्वच्छ पानी भी प्रदूषित होता है।

स्वरूप सागर फतह सागर लिंक नहर की समुचित सफाई व्यवस्था से इसे साफ–सुथरा रखा जावे। इसमें प्रकाश व्यवस्था हो, तो साहसी पर्यटक इसमें नौकायन कर सकेंगे। नियमित सफाई रहने से इसका जल स्वच्छ रहेगा। अवांछित खरपतवार भी नहीं पनपेगी और यह एक विकसित एवं विशिष्ट पर्यटक स्थल बन सकेगा। इसके मुहाने पर एक पार्क स्थित है जिसका वर्तमान स्वरूप अव्यवस्थित है। आवश्यकता है इसके उचित रखरखाव, नियमित फव्वारें एवं समुचित प्रकाश व्यवस्था की।

इस झील के पश्चिमी भाग अम्बावगढ़ के नीचे स्थित रोड़ के सहारे–सहारे काफी अविकसित भूमि पड़ी है। वर्तमान में यहां पर एक पार्क विकसित किया जा रहा है। यह स्थल कचरा डालने, अवांछित खरपतवार या असामाजिक तत्वों के विश्राम स्थल के रूप में है। इसे व्यवस्थित फुलवारी, सजावटी पौधों एवं प्रकाश व्यवस्था के साथ विकसित किया जाना चाहिये जिससे यह झील पुनः पर्यटकों एवं शहरवासियों के लिए आकर्षण का केन्द्र बन सकें। यहां पर मुख्य पाल स्थित सुन्दर छतरी एवं मुख्य घाट से नियमित नौकायन भी संभव है।

झील का प्रदूषित स्वरूप : स्वरूप सागर विरासत काल में एक महत्वपूर्ण झील थी। यहाँ के पूर्व महाराजा राजमहलों से एक जीपनुमा वाहन जो सड़क और पानी दोनों पर चल सकता था, में बिराज कर स्वरूप सागर की सुन्दर छतरियों के पास से गुजरते हुए बाहर निकलते थे। यह झील सुन्दर, साफ–सुथरी एवं स्वच्छ पानी से भरी हुई अपार मछलियों युक्त थी। जलीय खरपतवारों का नामों–निशान नहीं था। इसके विपरीत आज इस झील में पिछोला का उत्तरी भाग, कुम्हारिया तालाब, रंगसागर के चारों ओर बसी हुई बस्तियों, होटल्स आदि का गन्दा पानी, सीवरेज नियमित रूप से समाहित होते हुए स्वरूप सागर की ओर बहता है एवं पानी के साथ बहकर आई लगभग काफी गन्दगी धीरे–धीरे वहीं एकत्रित होती रहती है, जिससे यहां का पानी दुर्गन्धयुक्त, विषैला, जलीय खरपवारयुक्त एवं मछलियों रहित हो गया है। यहां यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा कि यह झील एक तरह से उदयपुर शहर का सेफ्टी टेंक बन चुकी है।

क्या पिछोला का उत्तरी क्षेत्र कुम्हारिया तालाब, रंग सागर एवं स्वरूप सागर को ''वेनिस'' की तरह विकसित नहीं किया जा सकता? इसके चारों ओर सुन्दर आवासीय स्थल बने, व्यवस्थित बाजार एवं फूड हब विकसित हो, पर्यटकों के लिए मनोहरी एवं सुविधायुक्त स्थल बने। इस हेतु इस घनी आबादी वाले क्षेत्र से विसर्जित गन्दे पानी एवं सीवरेज के निस्तारण की वैज्ञानिक पद्धति से समुचित व्यवस्था होनी चाहिये। इससे जो पर्यटक वेनिस जाते हैं वे उदयपुर शहर का भ्रमण भी अवश्य करना चाहेंगे।

स्वरूप सागर – पूर्णतया प्रदूषित दृश्यावली – स्थानीय नागरिकों द्वारा डाली गई एवं बहकर आई पूजन सामग्री एवं गन्दगी

पानी की सतह पर फैली काई

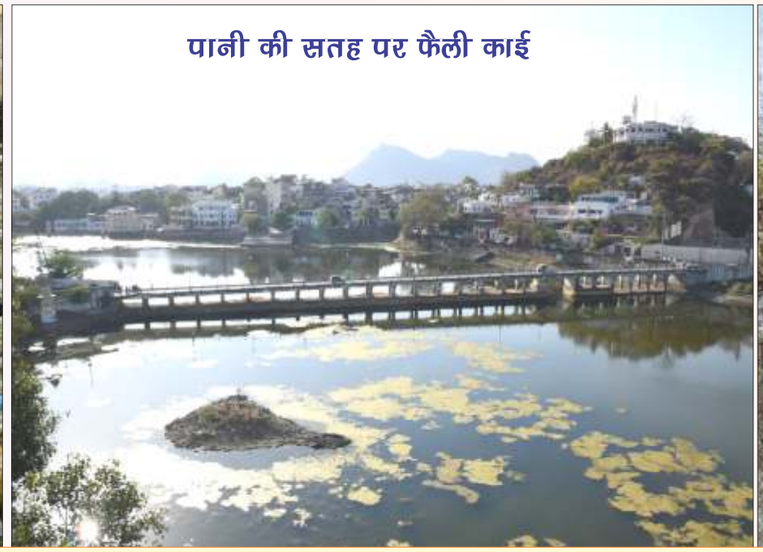

पाल पर फैली जलीय घास एवं खरपतवार

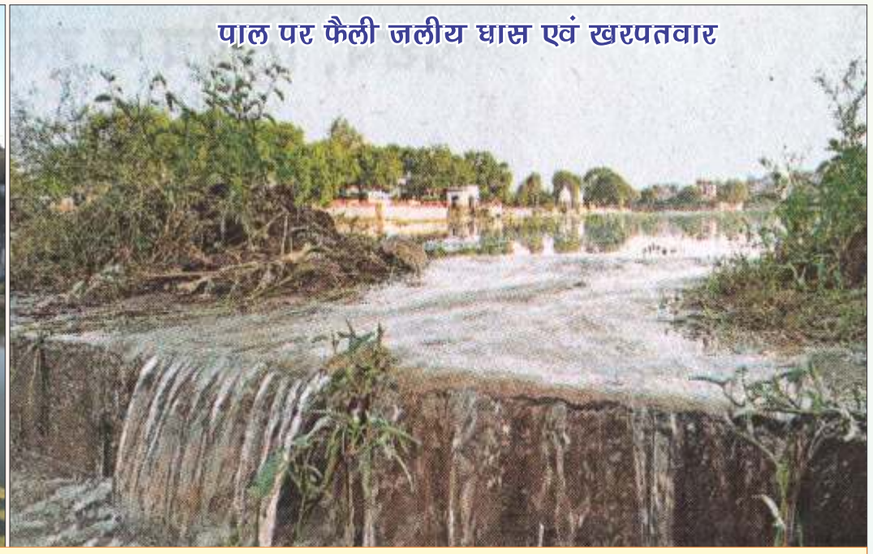

स्वरूप सागर की पाल के पास त्यौहार विशेष पर डाली गई प्लास्टिक थैलियों में बन्द पूजन या हवन सामग्री, फूल मालाएँ, नारियल, कलश, प्लास्टिक डिस्पोजल्स आदि सामग्री डाल दी जाती है एवं अन्य झीलों (अमरकुण्ड, रंगसागर एवं कुम्हारिया तालाब) से भी हवा के बहाव से उपरोक्त सामग्री इस झील में प्रवेश कर जाती है। इस गन्दगी को झील से नियमित रूप से हटायी जानी चाहिये ताकि इस झील का मनोहारी दृश्य अति सुन्दर बना रह सकेगा। इस झील में भी नियमित नाव संचालन से गन्दगी, खरपतवार आदि पर नियंत्रण संभव हो सकेगा।

स्वरूपसागर गेट के पास जमा गन्दगी गेट के खम्भों के नियमित रखरखाव के अभाव में इन पर काई, घास आदि पसरी हुई है। इनका नियमित रखरखाव, रंगरोगन वर्षा ऋतु से पूर्व किया जाना चाहिये।

पुलिया की सतह पर लटकते पाईप, देवरे के चारों तरफ अव्यवस्थित पहाड़ी – इस क्षेत्र को नियमित रखरखाव एवं दर्शनीय स्थल के रूप में नगर निगम या समीप स्थित हिन्दुस्तान जिंक, वॉलकेम की भागीदारी से भी विकसित किया जा सकता है।

झील के उत्तरी छोर एवं हिन्दुस्तान जिंक के आधुनिक एवं उद्यानयुक्त विकसित कार्यालय भवन के नीचे नाले का विकृत दृश्य, इस स्थान को एक सुन्दर झरने के साथ टेरेस गार्डन के रूप में भी नगर निगम या हिन्दुस्तान जिंक द्वारा विकसित किया जा सकता है

स्वरूप सागर – जलीय खरपतवार, अन्य प्रदूषक तत्त्व एवं अनियमित रखरखाव

स्वरूप सागर एवं फतहसागर लिंक नहर का प्रदूषित स्वरूप

स्वरूप सागर में स्थित टापू पर अक्सर मगरमच्छ विचरण करते देखे जाते हैं। चूंकि इस झील का यह हिस्सा चारों ओर आबादी से घिरा हुआ है एवं इसके पास में घाट भी स्थित है। अतः इनको बागदड़ा तालाब में स्थानान्तरित कर दिया जाना चाहिये।

स्वरूप सागर के पश्चिमी छोर पर स्थित इस पार्क को सुव्यवस्थित रूप से विकसित कर नियमित रखरखाव किया जाना चाहिये।

इस पार्क को एक सुन्दर उद्यान में परिवर्तित किया जाना चाहिये।